संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी समस्याओं को निपटाया जा सके । इसी सिलसिले में एक छोटी सी जगह को एक सजावटी ताल के रूप में बदल दिया गया था ।

(ख) जी हां ।

(ग) परिवर्तन और परिवर्धन में सिविल निर्माण कार्य, बिजली और स्वच्छता संबंधी फिटिंग, एयर कंडीशनरों और फर्नीचर को शामिल करते हुए कुल ६७,४४० रुपये ३८ नये पैसे खर्च हुए ।

हिन्दी टाइपराइटरों के लिए कुंजी-पटल

१७६०. श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) हिन्दी टाइपराइटर का नया कुंजी-पटल मानकीकृत करने का काम पिछले कितने वर्षों से चल रहा है;

(ख) जो कुंजी-पटल कुछ वर्ष पहले निश्चित किया गया था, क्या उसमें कोई परिवर्तन करने का विचार किया जा रहा है; और

(ग) नये कुंजी-पटल के अनुसार हिन्दी टाइपराइटरों के बनने में देरी होने का क्या कारण है और कब तक ये नये टाइपराइटर बन कर बाजार में आने की आशा है ?

शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भक्त दर्शन) : (क) से (ग). नवम्बर, १९५३ में लखनऊ में हुए देवनागरी लिपि सुधार सम्मेलन की सिफारिशों के आधार पर हिन्दी टाइपराइटरों के लिए एक मानकीकृत कुंजी-पटल तैयार करने हेतु १९५५ में एक समिति नियुक्त की गई थी । समिति ने अपनी अन्तिम रिपोर्ट दिसम्बर, १९५६ में प्रस्तुत की । समिति द्वारा सिफारिश किये गये कुंजी-पटल को भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया था और इस सम्बन्ध में मार्च, १९५७ में एक प्रेस नोट जारी कर दिया गया था । तत्पश्चात् अगस्त, १९५९ में हुए शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन के निर्णय के अनुसार देवनागरी लिपि सुधार के फलस्वरूप १९६० में कुंजीपटल संशोधन कर दिया गया ।

सुधरी हुई देवनागरी लिपि के आधार पर संशोधित कुंजी-पटल विभिन्न टाइपराइटर निर्माताओं को स्वीकार्य नहीं था क्योंकि इससे वर्तमान टाइपराइटरों के निर्माण और डिजाइन में बहुत बड़े परिवर्तन करने पड़ते । इसलिए निर्माताओं के परामर्श से एक नया कुंजी-पटल तैयार किया गया और इसकी घोषणा जनवरी १९६२ में की गई ।

उसके पश्चात् महाराष्ट्र सरकार ने भी मराठी टाइपराइटरों के लिए एक कुंजी-पटल तैयार किया, जिसमें देवनागरी लिपि का प्रयोग किया गया था । एक ही लिपि (अर्थात् देवनागरी) के लिए दो भिन्न कुंजी-पटल रखना ठीक नहीं समझा गया और इसलिए दोनों के लिए एक ही कुंजी-पटल तैयार करने के लिए महाराष्ट्र सरकार और भारत सरकार के प्रतिनिधियों की एक बैठक नवम्बर १९६३ में हुई थी । नये देवनागरी (हिन्दी–मराठी) कुंजी-पटल को अन्तिम रूप दे दिया गया है और १६-३-६४ को इसकी घोषणा कर दी गई है । देवनागरी कुंजी-पटल की प्रतियां, देवनागरी अक्षरों के आर्ट डिजाइन सहित, उद्योग मंत्रालय को भेज दी गई हैं, जो हिन्दी टाइपराइटरों के निर्माण के कार्य की देखभाल करेगा ।

All India Services Examinations

1761. Shri Rishang Keishing: Will the Minister of **Home Affairs** be pleased to state:

(a) the number of candidates who sat in the written examinations held by the U.P.S.C. for All India Services Viz., I.A.S. I.F.S., I.A.A.S., I.P.S. and C.S.S. during the period from 1st April, 1963 to 31st March, 1964;

(b) the number of candidates who passed the written examination and were called for oral interview; and

(c) the number of candidates belonging to Scheduled Castes and Scheduled Tribes who passed the written examination and were called for interview?

The Deputy Minister in the Ministry of Home Affairs (Shri L. N. Mishra): (a) 4282 candidates appeared at the Indian Administrative Service etc. Examination, 1963, held in October/November, 1963.

(b) The Commission have decided to call 852 candidates in all for interview for Personality Test on the results of the written part of the examination.

(c) The Commission have decided to call 202 candidates belonging to Scheduled Castes and 42 belonging to Scheduled Tribes for interview for Personality Test on the results of the written part of the examination.

Suicides in Union Territories

1762. **Shri Dhuleshwar Meena:**
Shri Ramachandra Ulaka:

Will the Minister of **Home Affairs** be pleased to state:

(a) whether there were any cases of suicides on account of hunger in the Union Territories during the last six months; and

(b) if so, the number thereof?

The Deputy Minister in the Ministry of Home Affairs (Shri L. N. Mishra): (a) and (b). The information is being obtained and will be placed on the Table of the House when available.

पाठ्य-पुस्तकों में ग्रासाम चीन का भाग

१७६३. **श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :**
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उनका ध्यान ३१ दिसम्बर, १९६३ के दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित "पाठ्य-पुस्तकों में ग्रासाम चीन का भाग" शीर्षक समाचार की ओर गया है;

(ख) यदि हां, तो इन पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशक और लेखक कौन हैं और वे कब प्रकाशित हुई तथा इस सम्बन्ध में ग्रन्य जानकारी की बातें क्या है;

(ग) क्या ये पुस्तकें ग्रब भी चालू हैं; और

(घ) इनके लेखकों और प्रकाशकों के विरुद्ध ग्रब तक क्या कार्यवाही की गई है ?

शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्रीमती सौन्दरम रामचन्द्रन) : (क) से (घ). पश्चिम बंगाल सरकार से तथ्यों का पता लगाया जा रहा है ।

Sangeet Natak Akademi Grant to Madras

1764. **Shri Dharmalingam:**
Shri Muthu Gounder:

Will the Minister of **Education** be pleased to state:

(a) whether the Sangeet Natak Akademi gave any financial assistance to Madras for promotion of Drama in the State during 1962-63 and 1963-64 so far;

(b) if so, the amount asked for; and

(c) the amount provided in each of the two years?

The Minister of Education (Shri M. C. Chagla): (a) Grants are not given by the Sangeet Natak Akademi on regional or State basis. These are given to the individual institutions.

(b) and (c). The grants sanctioned by the Akademi to various institutions in Madras State for the promotion of